Research Paper Environment

Revaadi Jile Ki Mittiyon Ke Prakaar Aur Unase Sambandhit Samasyaen

रेवाड़ी जिले की मिट्टियों के प्रकार और उनसे सम्बंधित समस्यांए

DR. CHANDRAPAL YADAV	Vill. Post. Goad, Teh. Narnaul, Dist. Mohinder Garh, Hayarana India 123001
Mrs. Dr. Vinita Yadav	Lecturer, Geogrophy, R.V.M. School, Jadra (Revaadi)

KEYWORDS

परिचय : µ

रेवाड़ी जिला हरियाणा राज्य का एक महत्वपूर्ण जिला है। एक नवम्बर 1989 को रेवाड़ी जिले का निर्माण किया गया था। महाभारत काल में राजा रैवत की लड़की रेवा जिसकी शादी बलराम (कृष्ण जी के बड़े भाई) के साथ हुई थी, उसको यह इलाका दहेज में दिया गया था। शुरू में इसको रेवाड़ी कहा जाता था। कालान्तर में इसका नाम बदलकर रेवाड़ी हो गया। यही इलाका बाद में विकसित होकर एक कस्बा बना तथा फिर तहसील बना और 1989 में जिला बना। हरियाणा के दक्षिणी भाग में स्थित है। इसके उत्तर में झज्जर पूर्व में गुड़गांव, पश्चिम में महेन्द्रगढ़ जिला तथा दक्षिण में राजस्थान राज्य का अलवर जिला स्थित है।

रेवाड़ी जिले की भौगोलिक स्थिति : µ

रेवाड़ी का अंक्षाशीय विस्तार 27' 57' 17' उत्तरी अंक्षाश से 28' 27' 47' उत्तरी अंक्षाश तथा देशान्तरीय विस्तार 76' 17 पूर्वी देशान्तर से 76' 51 पूर्वी देशान्तर के बीच है। समुन्द्र तल से इस जिले को सामान्य ऊचाई 245 मीटर है। रेवाड़ी जिले का कुल क्षेत्रफल 1594 वर्ग किलोमीटर है।

रेवाड़ी जिले की मिट्टियों के प्रकार एवं समस्याऐं : एक विश्लेड्डण

भू–पृष्ठ की सबसे ऊपरी सतह पर पाये जाने वाले ढीले–ढाले पदार्थ को ही मिट्टी कहते हैं। ह्यूग हैमन्ट बैनेट के शब्दों में "मिट्टी" भूतल पर मिलने वाले संगठित पदार्थों की वह ऊपरी परत है जो मूल चट्टानों तथा वनस्पति के विखण्डन के योग से बनती है। इससे स्पष्ट होता है कि मिट्टी न केवल मूल चट्टानों का चूर्ण हैं अपितु इसमें वनस्पति के सड़े–गले अंश तथा सूक्ष्म जीवाश्म सम्मिलित होते हैं। विखण्डन एवं क्षयीकरण की शक्तियों के प्रभाव के परिणाम स्वरूप धरातलीय चट्टानों में निरन्तर टूट–फूट होती रहती है जिसके कारण चट्टानें क्रमशः बारीक चूर्ण में परिवर्तित होती रहती हैं। यही चूर्ण वनस्पति के सड़े–गले अंश के साथ मिलकर मिट्टी का निर्माण करता है। इससे स्पष्ट है कि मिट्टी भू–पृष्ठ के ऊपरी भाग की मूल चट्टानों की टूट–फूट से प्राप्त शैली चूर्ण तथा वनस्पति के सड़े–गले अंश जिसे जीवांश कहते हैं, के प्राकृतिक सम्मिश्रण को कहते हैं जिसमें वनस्पति एवं पौधों के उगने के लिए आवश्यक क्षमता होती है।

मिट्टी मानव की अनिवार्य सम्पत्तियों में से एक है तथा मानव जीवन का मूल आधार है क्योंकि मिट्टी से ही मनुष्य की तीन मूलभूत आवश्यकताओं–भोजन, वस्त्र और मकान की पूर्ति होती है। भूतल की समस्त वस्तुऐं चाहे जड़ हो अथवा चेतन, प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप में मिट्टी पर ही आश्रित रहती है। यथार्थ में यदि भूतल पर कोई सर्वाधिक मनुष्योपयोगी वस्तु है तो वह मिट्टी ही है। "मनुष्य इस पृथ्वी की सन्तान है तथा उसकी धूल की धूल है।1 मनुष्य की शिक्षा–दीक्षा एवं सभ्यता का विकास मिट्टी से ही होता है।" इसीलिए विलकॉक्स ने कहा है कि "मानव सभ्यता का इतिहास मिट्टी का इतिहास और प्रत्येक व्यक्ति की शिक्षा मिट्टी से आरम्भ होती है।"

सिन्धु तथा दजला फरात की नदियों की सभ्यताओं के विकास में इन प्रदेशों की उपजाऊ नदियों का ही योगदान रहा है, इसीलिए रूजबेल्ट ने भी ठीक ही कहा है कि यदि किसी स्थान से मिट्टी समाप्त हो जाये तो वहाँ से मनुष्यों को भी चले जाना चाहिए और सम्भवतः इस प्रक्रम में अधिक समय नहीं लगता है। भारत जैसे कृषि प्रधान देश में जहाँ देश की 70 प्रतिशत जनसंख्या कृषि एवं उससे सम्बन्धित कार्यों में संलग्न है, मिट्टी का महत्व और भी बढ़ जाता है। उपजाऊ मिट्टियाँ देश की समृद्ध कृषि व्यवस्था को पोषण प्रदान करने में समर्थ होती हैं क्योंकि अच्छी मिट्टी अच्छी और पुष्ट फसलों को जन्म देती है। जबकि इसके विपरीत अनुत्पादक मिट्टियाँ अस्थिर एवं कमजोर अर्थ–व्यवस्था तथा जनसंख्या के निम्न घनत्व एवं निम्न जीवन स्तर को बढ़ावा देती हैं। यही कारण है कि भारत में गंगा–सतजल के मैदानी प्रदेश एवं प्रायद्वीपयी तटीय मैदानों की उपजाऊ काँप मिट्टी वाले प्रदेशों में उन्नतिशील कृषि व्यवस्था एवं सघन जनसंख्या पायी जाती है, जबकि इसके विपरीत आन्ध्र प्रदेश के तेलंगाना पठार की कम गहरी एवं मोटे कणों वाली तथा पश्चिमी राजस्थान की मरुस्थलीय एवं कम उपजाऊ मिट्टियों वाले प्रदेशों में अविकसित एवं पिछड़ी हुई कृषि को आधार प्रदान करने में असमर्थ रही हैं। अतः यहाँ जनसंख्या की विरलता पाई जाती है।

मिट्टी के निर्माण, संरचना, गठन एवं रंग–रूप आदि पर मूल चट्टानों की भौतिक एवं रासायनिक संरचना, उच्चावचन एवं धरातलीय ढाल, जलवायु तथा वनस्पति आदि कारकों का प्रभाव पड़ता है। मिट्टी का निर्माण करने वाले शैल चूर्ण की प्राप्ति धरातल पर अनावृत मूल चट्टानों के अपक्षरण से होती है। यदि मूल चट्टान में किसी खनिज विशेष का अभाव है तो इससे बनने वाली मिट्टी में भी उस खनिज का साधारणतया अभाव पाया जाता है। ठीक इसी प्रकार मिट्टी का रंग एवं उसके कणों का आकार भी मूल चट्टानों के रंग एवं कणों की विशेषताओं पर ही निर्भर करता है। उदाहरण स्वरूप ज्वालामुखी से निःसृत लावा की चट्टानों के विखण्डन से बनी मिट्टी का रंग काला तथा कण अत्यन्त बारीक होते हैं, जबकि ग्रेनाइट, नीस, शिष्ट जैसी प्राचीन रूपान्तरित चट्टानों की टूट–फूट से निर्मित मिट्टियाँ कंकरीली, एवं मोटे कणों वाली होती हैं।

मिट्टी निर्माण के लिए मूल चट्टानों का विखण्डित होकर छोटे कणों में परिवर्तित होना आवश्यक होता है। इस कार्य का सम्पादन जलवायु एवं अन्य कारकों द्वारा किया जाता है। जलवायु द्वारा मूल चट्टानों का अपक्षरण होता है, जिससे चट्टानों शैल–चूर्ण में बदलने लगती हैं। चट्टानों के अपक्षरण की गति एवं तीव्रता तथा मिट्टी के निर्माण की प्रक्रिया, जलवायु के प्रमुख तत्व तापमान एवं नमी की मात्रा की भिन्नता द्वारा निर्धारित होती है, क्योंकि जलवायु के इन्हीं तत्वों के अनुसार मूल चट्टान के अपक्षय तथा वनस्पति एवं जीवाणुओं की अभिवृद्धि में भिन्नता मिलती है। यदि किसी स्थान की जलवायु शीतल तथा आर्द्र होती है तो वहाँ मिट्टी में खनिज तथा रासायनिक पदार्थ अधिक गहराई तक पहुँच जाते हैं जबकि अधिक वर्षा वाले प्रदेशों में मिट्टी में घुले हुए खनिज पदार्थ बहकर निकल जाते हैं। अतः मिट्टी में खनिज एवं रासायनिक तत्वों की कमी हो जाती हैं।

प्राकृतिक वनस्पति के सड़ने–गलने से मिट्टी के पूर्ण विकास एवं उपजाऊपन के लिए आवश्यक जीवाश्म तत्व की प्राप्ति होती है। जीवांश तत्व की उपस्थिति मिट्टी की उर्वरा शक्ति को अत्यधिक प्रभावित करती है। मिट्टी के निर्माण में धरातलीय ढाल का भी महत्वपूर्ण हाथ रहता है। क्योंकि किसी भी प्रदेश में भूमि द्वारा वर्षा के जल को सोखने की क्षमता तथा भूमिक्षरण की मात्रा काफी हद तक उस प्रदेश के उच्चावचन एवं धरातलीय ढाल पर निर्भर करती है, न्यून ढाल वाले धरातल पर वर्षा का अधिकांश जल भूमि में अन्दर चला जाता है, अतः ऐसे प्रदेशों में मिट्टी के पोषक तत्वों के जल के साथ शैल चूर्ण की ऊपरी परत को ही बहा ले जाता है। अतः ऐसे प्रेदशों में भूमि कटाव की समस्या बलवती हो जाती है तथा मिट्टी के विकसित होने का अवसर ही प्राप्त नहीं होता है।

मिट्टी निर्माण की दृष्टि से सामान्य ढाल वाला धरातलीय प्रदेश उपयुक्त होता है जहाँ न तो आवश्यकता से अधिक जल भूमि के अन्दर प्रवेश कर सके और न ही मिट्टी की ऊपरी परत जल द्वारा प्रवाहित की जा सके। फलतः ऐसे प्रदेशों में मिट्टी की गहरी परत मिलती है, जैसा गंगा–सतलुज के मैदानी प्रदेश तथा मैदानों में, देखने को मिलती है।

उपरोक्त सभी कारकों द्वारा एक लम्बी अवधि तक अपना प्रभाव डालने के उपरान्त ही मिट्टी का पूर्ण विकास सम्भव हो पाता है। अतः समय अवधि भी मिट्टी के निर्माण में एक महत्वपूर्ण कारक के रूप में कार्य करती है।

भारत एक विशाल देश है जिसमें अनेक प्रकार की भौतिक विविधताओं के पाये जाने के कारण मिट्टी सम्बन्धी विभिन्नताओं का पाया जाना अत्यन्त स्वाभाविक है। यहाँ अनेक प्रकार की मिट्टियाँ पायी जाती हैं। भिन्न–भिन्न विद्वानों एवं मृदा शास्त्रियों ने अपने–अपने ढंग से मिट्टी के रंग–रूप, संरचना, उर्वरा शक्ति, क्षेत्रीय स्थिति आदि विभिन्न आधारों पर देश की मिट्टियों का विभाजन प्रस्तुत किया है, परन्तु कोई भी एक आधार इन मिट्टियों को पूर्ण रूप से विभाजित करने में सक्षम नहीं है।

मिट्टियों के प्रकार : μ
भारतवर्ष की भाँति रेवाड़ी जिले में दो प्रकार की मिट्टियाँ मिलती हैं। सामान्य रूप से रेवाड़ी जिले में पाई जाने वाली मिट्टियाँ निम्न हैं:

1. *दोमट मिट्टी*
2. *बालू मिट्टी*

Fig. 2.3 *में रेवाड़ी जिले के ब्लॉक स्तर पर दोमट मिट्टी और बालू मिट्टी को दर्शाया गया है।*

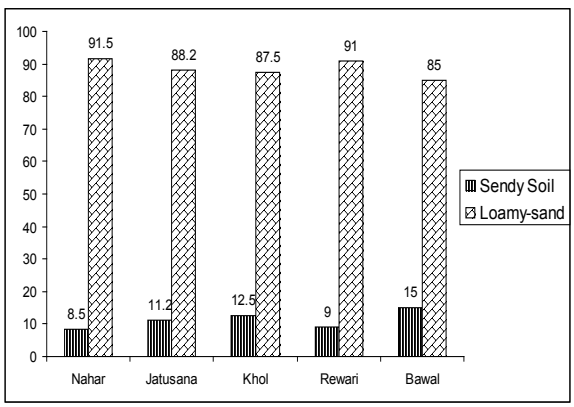

Fig. 2.3

Table No. 2.4
Information on Soils for the District
(Area In Hectare)

Sr. No.	Name of the block	Black		Red Soil		Sendy Soil		Loamy-sand		Others	
		Area	%	Area	%	Area	%	Area	%	Area	%
1.	Nahar	--	--	--	--	1710	8.5	16393	91.5	--	--
2.	Jatusana	--	--	--	--	2944	11.2	23340	88.2	--	--
3.	Khol	--	--	--	--	2896	12.5	20271	87.5	--	--
4.	Rewari	--	--	--	--	2438	9.0	24650	91.0	--	--
5.	Bawal	--	--	--	--	3860	15.0	21875	85.0	--	--

Source: Agriculture office Rewari

तालिका 2.4 में ब्लॉक स्तर पर मिट्टी के प्रकारों को एवं उनके क्षेत्रफल को दर्शाया गया है। इस तालिका से स्पष्ट होता हैं कि रेवाड़ी जिले में सिर्फ दो प्रकार की मिट्टी पाई जाती हैं बलुई एवं दोमट मिट्टी सबसे अधिक नाहड़ ब्लॉक में पाई जाती है एवं बलुई मिट्टी का प्रतिशत सबसे अधिक बावल ब्लॉक में पाया जाता है।

1. दोमट मिट्टी : μ
इस मिट्टी का निर्माण चीका तथा बलुई मिट्टियों के मिश्रण से होता है। इस मिट्टी में चीका की अधिकता होती है जहाँ चीका की बाहुल्यता होती है वहीं इस मिट्टी को चिकनी मिट्टी कहा जाता है। यह मिट्टी बहुत उपजाऊ होती है। कृषि की दृष्टि से यह सर्वाधिक उपयोगी मिट्टी होती है। इस मिट्टी में पोटाश तथा चूना की मात्रा अधिक होती है तथा नाइट्रोजन एवं फॉस्फोरस की कमी होती है। गेहूँ, जो, ज्वार, बाजरा, गन्ना, मक्का, सरसों, दालों तथा तिलहन पदार्थों की कृषि के लिए श्रेष्ठ प्रकार की मिट्टी होती है।

रेवाड़ी जिले में इस प्रकार की दोमट काँप मिट्टी यहाँ की 106529 हैक्टेयर भूमि अथवा कुल भूमि के 88.50 प्रतिशत भाग पर फैली हुई है। यह मिट्टी रेवाड़ी जिले के नाहड विकास खण्ड, जाटूसाना विकास खण्ड, खोल विकास खण्ड रेवाड़ी विकास खण्ड तथा बावल खण्ड में पाई जाती है।

Table 2.5 :
Micronutrient status of soils in the district

Block	No. of Samples	Fe		Mn		Zn	
		Sufficient	Dificient	Sufficient	Defficient	Sufficient	Deficient
Rewari	242	128	114 (47-6)	238	4	07	36 (14.4)
Koho	730	326	404 (55.3)	726	4	693	37 (5.07)
Jatusana	320	178	142 (44.3)	316	4	290	30 (9.4)
Bawal	220	43	177 (80.4)	138	82	81	139 (63.2)
Nahar	154	81	73 (47.4)	152	2	137	17 (11.0)
Total	1666	756	910 (54.6)	1570	96 (5.76)	14.8	258 (15.5)

The figures in parenthesis denote percentage
Source- Agriculture office district Rewari.

तालिका 2.5 में ब्लॉक स्तर पर मिट्टी के सूक्ष्म पोषक तत्वों को दर्शाया गया है। रेवाड़ी जिलें की मिट्टी में मैंगनीज, जिंक एवं फैरियम पाया जाता है।

2. बलुई मिट्टी : μ
बलुई मिट्टी का निर्माण नदियों में जमा तलछट से होता है, इस मिट्टी में चीका और बालू का मिश्रण होता है। जिस मिट्टी में बालू की मात्रा अधिक होती है उसे बलुई मिट्टी कहते हैं जिसमें चीका की मात्रा अधिक होती है उसे दोमट काँप मिट्टी कहते हैं। यह बलुई मिट्टी उपजाऊ होती है लेकिन दोमट की अपेक्षा इसकी उत्पादन क्षमता कम होती है। इस मिट्टी में भी चूना तथा पोटाश की मात्रा अधिक होती है तथा नाइट्रोजन तथा जीवांश की कमी होती है। इस प्रकार की मिट्टी नदियों तथा नहरों के किनारे पर अधिक पाई जाती है। इस प्रकार की मिट्टी को सिंचाई की अधिक आवश्यकता पड़ती है। यह मिट्टी गेहूँ, चना, बाजरा, मटर, मूँगफली, तिलहन, आलू आदि की खेती के लिए अधिक उपयोगी होती है।

रेवाड़ी जिले में इस प्रकार की बलुई मिट्टी यहाँ की कुल भूमि के 13848 हैक्टअर भूमि अथवा 11.50 प्रतिशत भाग पर फैली हुई है। यह मिट्टी रेवाड़ी जिले के नाहड विकास खण्ड, जाटूसाना विकास खण्ड, खोल विकास खण्ड तथा रेवाड़ी विकास खण्ड तथा बावल विकास खण्ड में पाई जाती है।

Table 2.6:
Information on problem soils in the district

Sr. No.	Type of Problem	Areet (ha)	Extent of Severity		
			Very severe	Severe	Mild
1.	Saline	17, 834	0	0	17,834
2.	Alkaline	47, 133	0	0	47, 133
3.	Acidic	0	0	0	0
4.	Soil erosion	29, 000	1,950	2,020	25,030
5.	Water-logged condition	342	0	0	342

Source- Agriculture office district Rewari.

तालिका 2.6 में रेवाड़ी जिले की मिट्टी की समस्याओं की जानकारी दी गई हैं।

HARSAC, CCS HAU Campus Hisar *के अनुसार जिलो रेवाड़ी के विभिन्न क्षेत्रों की मिट्टियों को अनेक भागों में वर्गीकृत किया है। जिसका विवरण थ्यहण् 2ण्2 में प्रदर्शित किया गया है।*

मिट्टी के कटाव की समस्या : μ
मिट्टी के कटाव अथवा भूमिरक्षण का आशय भूमि की मिट्टी के अपरदन से होता है। यह मिट्टी जल, वायु, हिम अथवा प्रकृति के अन्य किसी भी अपरदन के साधन द्वारा किया जाता है। भूमि को जोतने, पशु चराने तथा वृक्षों को काटने आदि के कारण जब भूमि वनस्पति विहीन हो जाती है तो जलवायु के कारकों तथा अन्य प्रकृति के साधनों द्वारा भूमि की ऊपरी सतह की मिट्टी को बहाकर अथवा प्रवाहित करके हटा दिया जाता है जिसके परिणामस्वरूप भूमि की उर्वरा शक्ति नष्ट हो जाती है तथा उपजाऊ प्रदेश अनुत्पादक एवं

बीहड़ क्षेत्रों में परिणत हो जाते हैं। योजना आयोग के अनुसार भारत में भूमि कटाव से प्रतिवर्ष सतही मिट्टी का 0.2 प्रतिशत भाग नष्ट हो जाता है। कृषि उत्पादन की दृष्टि से मिट्टी की यही ऊपरी सतह विशेष उपजाऊ होती है।

भूमि–क्षरण की समस्या ने भारत में गम्भीर रूप धारण कर लिया है। यहाँ प्रतिवर्ष करोड़ों टन मिट्टी बह कर समुद्र में चली जाती है अथवा वायु द्वारा उड़ाकर मरू भूमियों में पहुँचा दी जाती है। वर्षाकाल में तो यह समस्या अत्यन्त विकराल रूप धारण कर लेती है। भूमि–क्षरण वैसे तो प्रायः प्रत्येक स्थान पर होता रहता है, परन्तु इसकी मात्रा सर्वत्र एक समान नहीं होती। समतल तथा वनस्पति से आच्छादित भूमि की तुलना में ढालू तथा वनस्पति विहीन भूमि पर अपरदन तीव्र गति से होता है। इसके अतिरिक्त भूमि–क्षरण की गति एवं गहनता, मिट्टी की संरचना, भूमि के ढाल, वर्षा की मात्रा तथा प्रकृति एवं भूमि के उपयोग आदि पर निर्भर करती है।

रेवाड़ी जिले में भी भारतवर्ष की भाँति मिट्टी के कटाव की समस्या है। रेवाड़ी जिले की लगभग 29000 हैक्टेयर पर मिट्टी के कटाव का बुरा असर पड़ा है और यह कृषि की उपजाऊ भूमि बेकार हो गई है।

मिट्टी के कटाव के प्रकार : µ

1. परत अपरदन : µ

जब वर्षा का जल अथवा तेज गति से चलने वाली वायु द्वारा भूमि की ऊपरी सतह की मिट्टी को प्रवाहित कर हटा दिया जाता है तो इसे भूमि का परत अपरदन कहते हैं। इस प्रकार के अपरदन से देश में प्रतिवर्ष सर्वाधिक हानि होती है। राष्ट्रीय योजना आयोग के अनुसार ''इस प्रकार का अपरदन लकड़ी के लिए वनों को अत्यधिक काटने, अत्यधिक पशुचारण और स्थानान्तरण कृषि अथवा समतल भूमि पर उचित ढाल न बनाने के कारण होता है।'' इस प्रकार का अपरदन परती भूमि, ऐसी सभी कृषि योग्य भूमि जिसकी वनस्पति अत्यधिक पशुचारण अथवा किसी अन्य दुरूपयोग के कारण नष्ट हो चुकी है तथा उन समस्त ढालू, कृषि भूमियों और ढालू व उजाड़ वन क्षेत्रों, जिनकी जल सोखने की शक्ति उपरोक्त कारणों की वजह से घट गई है, पर विस्तृत रूप से पाया जाता है।

2. अवनालिका अपरदन : µ

जब वर्षा एवं बाढ़ का जल तीव्र गति से प्रवाहित होता है तो भूमि में छोटी नालियाँ तथा गड्ढे बना देता है। ये नालियाँ तथा गड्ढे कालान्तर में गहरे होकर बीहड़ों का रूप धारण कर लेते हैं। इस प्रकार के अपरदन को ही अवनालिका अपदरन कहते हैं। परत अपरदन की तुलना में यह अधिक हानिकारक होता है।

मिट्टी के कटाव के दुष्प्रभाव : µ

डॉ. ग्लोवर के अनुसार µ"भू–क्षरण के कारण देश निर्वासित हो जाते हैं। लोगों के स्वास्थ्य एवं समृद्धि का विनाश होने लगता है तथा कृषक बेकार घूमने लगते हैं। यह परिणाम एक वर्ष या कुछ वर्षों में उत्पन्न नहीं होते वरन् इसके सम्पन्न होने में शताब्दियाँ लग जाती हैं। यही कारण है कि भूमि के कटाव को धीरे–धीरे होने वाली मृत्यु कहा जा सकता है।" इन दुष्प्रभावों के अतिरिक्त नदियों की तलहटी में बालू जम जाने से नदियों में भीषण एवं आकस्मिक बाढ़ों का प्रकोप आरम्भ हो जाता है, तथा नदियाँ अपनी धारा में परिवर्तन करने लगती हैं और नदियाँ तथा बन्दरगाहों के मार्ग अवद्ध हो जाते हैं। सूखे की लम्बी अवधि के कारण जल स्त्रोतों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ने से सिंचाई में कठिनाई होती है। जगह–जगह निचली भूमि में पानी भर जाता है तथा उच्चकोटि की भूमि के नष्ट हो जाने से खेतिहर उत्पादन में अभूतपूर्व गिरावट आ जाती है।

मिट्टी के कटाव को रोकने के उपाय : µ

भूमि–क्षरण के इन भयंकर दुष्परिणामों को देखते हुए भूमि की सुरक्षा हेतु निम्नलिखित उपायों को अमल में लाना परम आवश्यक हो जाता है।

1. भूमि का अपदरन रोकने के लिए पहाड़ी ढालों, बंजरभूमि तथा नदियों के किनारे वृक्षारोपण किया जाना चाहिए। क्योंकि वृक्षों की जड़े मिट्टी को बाँधे रखकर भूमि के लिए रक्षा कवच का काम करती है। वनों के लगाये जाने से नदियों की बाढ़ का वेग भी कम हो जाता है। यही कारण है कि वनाच्छादित भूमि में मिट्टी का ह्रास कम हो जाता है।
2. अनियन्त्रित पशु चारण पर रोक लगानी चाहिए तथा इसके लिए निश्चित भूमि पर चरागाहों की व्यवस्था की जानी चाहिए।
3. पठारी एवं ढालू भूमि पर सीढ़ीनुमा खेत बनाकर कृषि की जानी चाहिए, जिससे वर्षा का जल रुक–रुक कर बहे।
4. बाढ़ों को नियन्त्रित करने के लिए नदियों पर बाँध तथा जलाशयों का निर्माण किया जाना चाहिए, जिससे बाढ़ के समय नदियों के अतिरिक्त जल को इन जलाशयों में एकत्रित कर आवश्यकता के समय उपयोग में लाया जा सके।
5. वायु भूमि–क्षरण के प्रभावित क्षेत्रों में ऐसी खादों का प्रयोग किया जाना चाहिए, जिनसे मिट्टी की उर्वरता तथा जल–ग्रहण क्षमता बढ़ती रहे, मिट्टी को उड़ने से रोकने के लिए वायु की प्रवाह दिशा में वनस्पति अथवा अन्य साधनों से अवरोधक खड़े किया जाने चाहिए।
6. फसलों को हेर–फेर कर प्रणाली द्वारा उगाना चाहिए, क्योंकि यदि प्रत्येक क्षेत्र की अनिवार्य परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए कृषि की गई तथा प्राकृतिक वनस्पति को पशुओं की अनियमित चराई द्वारा नष्ट होने दिया गया तो इनसे भूमि–क्षरण की गति इतनी तेज हो सकती है कि जिस भूमि का कटाव होने में सामान्यतः 100 वर्ष लगते हैं, उतनी ही भूमि का कटाव एक वर्ष में अथवा एक दिन में भी हो सकता है।

REFERENCES

1. शर्मा, बी. एल. 1986 कृषि भूगोल साहित्य भवन, आगरा। 2. भटनागर, बी. एन. एवं मित्तल, एस. के. 1984 भारतीय कृषि की समस्याऐं, चित्रा प्रकाशन, मेरठ। 3. नेगी, बी. एस. 1986 कृषि भूगोल केदारनाथ रामनाथ, मेरठ। 4. ठंदमतरममए च्ण्छण् 1976 Land and Soil, Calcutta 5. जिला रेवाड़ी सांख्यिकीय सारांश 1990. 1991ए 2006. 2007ए 2008. 2009